



एग्री आर्टिकल्स

(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)

वर्ष: 03, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2023)

www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

ढेंचा: घरेलू एवं औद्योगिक उपयोग

(शालिनी रुखाया, नीलम एम. रोज एवं सरोज यादव)

परिधान एवं वस्त्र विज्ञान विभाग, चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

संवादी लेखक का ईमेल पता: shalinirukhaya16@gmail.com

किसान अपनी फसल से अच्छी पैदावार पाने के लिए कड़ी मेहनत करता है। वह अपने खेत में कई तरह की रासायनिक खादें, कीटनाशक आदि का उपयोग करता है जिससे उसे फसल से ज्यादा पैदावार मिल सके, लेकिन इससे खेत की मिट्टी की उर्वरता शक्ति खत्म होने लगती है, ऐसे में किसानों को हरी खाद का उपयोग करना चाहिए। इससे फसल का उत्पादन अच्छा होगा, साथ ही मिट्टी की उर्वरता शक्ति भी बढ़ाई जा सकती है।

हरी खाद को भूमि संरक्षण का आसान तरीका माना जाता है। इससे खेत की मिट्टी को उपजाऊ बनाने के साथ पोषक और जैविक पदार्थों की पूर्ति भी की जाती है। इसे सहायक फसल भी कहा जाता है, इससे खेत को नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटैशियम, जस्ता, तांबा, मैगनीज, लोहा और मोलिब्डेनम जैसे तत्व मिलते हैं। इसके अलावा खेत में कार्बनिक पदार्थ की मात्रा बढ़ती है और खेत की भौतिक दशा में भी सुधार आता है।

हरी खाद वाली फसलें

हरी खाद के तहत कई फसलों का उपयोग किया जाता है जिनमें दलहनी और बिना दलहनी फसलें शामिल होती हैं। हरी खाद के लिए झाड़ियों और पेड़ों की पत्तियों, टहनियों को भी उपयोग में ला सकते हैं, लेकिन इसके लिए विशेष रूप से ढेंचा फसलों का उपयोग किया जाता है। इन फसलों को खेतों में लगाकर भूमि में सुधार किया जाता है। इनमें भूमि में प्राकृतिक रूप से नाइट्रोजन स्थिर करने का गुण होता है। कौनसी फसल कितना नाइट्रोजन स्थिर करेगी, यह उसमें मौजूद हरे पदार्थ पर निर्भर है। ढेंचे में प्रति हेक्टेयर हरे पदार्थ की मात्रा करीब 144 क्विंटल होती है। इससे भूमि को करीब 77 किग्रा अतिरिक्त नाइट्रोजन मिल जाता है।

सनई के सिवाय, खरीफ के सीजन में होने वाली हरी खाद की अन्य फसलों में न तो ढेंचे जितना हरा पदार्थ होता है, न नाइट्रोजन स्थिर करने की क्षमता। बुआई के बाद तय समय पर खेत में पलटने और सड़ाने से इसमें उपलब्ध हरा पदार्थ भूमि में कार्बनिक तत्वों को बढ़ाता है। इसके नाते भूमि में मित्र जीवाणुओं की संख्या और सक्रियता बढ़ती है। इन जीवाणुओं की भूमि में उपलब्ध पोषक तत्वों को पौधों को आसानी से प्राप्त कराने में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। फसल चक्र में लगातार ढेंचे की फसल को शामिल करने से भूमि की भौतिक एवं रासायनिक संरचना में सुधार होता है। भारी बारिश के दौरान इसकी गहरी जड़ें मिट्टी की उपजाऊ परत बहने नहीं देती। भूमि में पानी सोखने की क्षमता बढ़ती है।

ढेंचा के तने का प्रयोग मोटे, चमकदार तंतु विकसित करने में किया जा सकता है। एक शोध के तहत ढेंचा से जैविक एवं रासायनिक विधि से तंतु निकाल कर उसकी रासायनिक एवं एंजाइमेटिक क्रियाओं से

धुलाई (स्काउरिंग) की गई। इन तंतुओं को औद्योगिक सॉफ्टनर्स (केटायनिक, नॉन आइनिक एवं सिलिकन) और तेल आधारित इमलशन का उपयोग कर नरम किया गया। पाया गया कि इन तंतुओं की मदद से धागों का निर्माण करके हथकरघे पर कपड़ा तैयार किया जा सकता है। इनके सीधे तंतुओं से बिना बुने कपड़े का भी निर्माण करना सम्भव है। इस शोध अध्ययन के मुताबिक, जैविक निष्कर्षण विधि से प्राप्त तंतु में रासायनिक विधि से प्राप्त तंतु से बेहतर भौतिक गुण होते हैं। खास बात यह है कि मोटे जूट के ताने और ढैंचा के बाने से बने मिश्रित कपड़े में बेहतर गुण, मजबूती एवं लचीलापन पाया गया है। शोध में यह भी पाया गया कि शुद्ध ढैंचा से निर्मित बिना बुने एवं बुने कपड़ों को मौजूदा जूट एवं कॉयर जियो टेक्सटाइल के विकल्प के रूप में काम में लाया जा सकता है। इससे पहाड़ी क्षेत्रों में मृदा कटाव भी रोका जा सकता है।

कच्ची और पक्की सड़कों के सुदृढीकरण में भी इसका प्रयोग किया जा सकता है। अमूमन ढैंचा का प्रयोग तराई क्षेत्र में फसलों की खेती को लाभ पहुंचाने के लिए हरी खाद के रूप में किया जाता है लेकिन इस खोज से किसान इसके जरिये धन भी कमा सकेंगे। मिट्टी की गुणवत्ता की जांच में यह भी पाया गया है कि ढैंचा के तनों से तंतुओं का निष्कर्षण के लिए प्रयोग करने से उसकी हरी खाद संबंधी उपयोगिता प्रभावित नहीं होती है।

ढैंचा: उद्योगिक उपयोगों का महत्व

ढैंचा भारतीय कृषि में महत्वपूर्ण स्थान रखने वाली एक विशेष प्रकार की फसल है जिसे आमतौर पर कई खास गुणों के लिए जाना जाता है। इसके पास कई उद्योगिक उपयोग भी हैं जो इसे व्यापक रूप में उपयोग करने के लिए उत्साही बनाते हैं, जिनका वर्णन इस प्रकार है-

1. उर्वरक उत्पादन: ढैंचा की फसल से उर्वरक बनाने में उपयोग होता है। इसके पौधों में नाइट्रोजन की अच्छी मात्रा होती है, जो कि खासतौर पर खाद्य फसलों के लिए उपयुक्त है।
2. औद्योगिक खनिजन निर्माण: इस की फाइबर का उपयोग खासतौर पर रूखों और टेक्सटाइल उद्योग में किया जाता है। इसकी तंतु की गुणवत्ता कागज उद्योग में भी उपयुक्त है।
3. उद्योगिक तेल निर्माण: ढैंचा के बीज से तेल निकाला जा सकता है, जो कि खाद्य तेल उद्योग में उपयुक्त है। इसमें उच्च मात्रा में लिनोलेनिक एसिड, जो एक प्रकार का आवश्यक तत्व होता है।
4. औद्योगिक गोंद: इस की फाइबर से बने उत्पादों में गोंद का उपयोग होता है, जो कि कई उद्योगों में उपयुक्त है, जैसे कि कागज उद्योग, आदि।
5. शैक्षिक उपयोग: ढैंचा की उच्चतम पौष्टिकता की वजह से इसका उपयोग पशुओं के चारे के रूप में नहीं होकर, शैक्षिक उद्देश्यों के लिए भी किया जाता है। इसके शरीरिक गुण स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद होते हैं और यह बच्चों के शारीरिक विकास को प्रोत्साहित करने में मदद करता है।
6. कृषि उत्पादों की वृद्धि: इस की फसल का उपयोग संश्लेष्य स्तर पर खाद्य उत्पादों की वृद्धि में भी होता है। इससे उत्पादन को बढ़ावा मिलता है और भूखमरी को कम करने में सहायता मिलती है।
7. संरक्षण और पुनर्चक्रण: ढैंचा की फसल पूरी तरह से उपयोग होने के बाद भी उसका पुनर्चक्रण किया जा सकता है। इसके उपयोग से नए उत्पादों का निर्माण किया जा सकता है, जो कि पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता को बढ़ावा देता है।

ढैंचा: वस्त्र उद्योग में एक नई ऊंचाई की ओर

भारतीय कृषि और उद्योग क्षेत्र में हमेशा नए उत्थान के लिए खोज होते रहे हैं। ढैंचा, जिसे हम आमतौर पर गहनों की फसल के रूप में जानते हैं, आजकल वस्त्र उद्योग में भी एक महत्वपूर्ण स्थान बना चुका है। ढैंचा का वस्त्र उद्योग में निम्नलिखित तरीकों से उपयोग किया जा सकता है-

1. परंपरागत और पर्यावरण संज्ञान: ढेंचा की फाइबर, जिसे विस्तार से "सोनिका" के नाम से जाना जाता है, पर्यावरण संकेत के रूप में महत्वपूर्ण है। यह ताजगी से भरी होती है, साथ ही पारंपरिक बुनाई में एक नई शैली को प्रवर्तित कर रही है। इससे वस्त्रों की गुणवत्ता में भी वृद्धि हो रही है।
2. अद्वितीय डिज़ाइन और स्टाइल: इस की फाइबर का नेचुरल चमक और मूल्यवान फील वस्त्र उद्योग में एक नए ट्रेंड का निर्माण कर रही है। इससे उपभोक्ता न केवल स्वास्थ्य के लिए अच्छा महसूस करते हैं, बल्कि उनकी पर्सनैलिटी को भी बढ़ावा मिलता है।
3. अद्वितीय और स्वस्थ वस्त्र: ढेंचा की फाइबर निष्कर्ष पूरी तरह से प्राकृतिक होती है और इसमें किसी भी प्रकार के विषाणु या केमिकल्स का प्रयोग नहीं होता है। इससे उत्पन्न वस्त्र स्वस्थता के लिए अधिक उपयुक्त होते हैं, जिससे यह उपयोगकर्ता को स्वस्थ रखता है।
4. संप्रेषण और पुनर्चक्रण: इस की फाइबर का संप्रेषण करना अत्यंत संवेदनशील है, जो इसे एक पुनर्चक्रणीय स्रोत बना देता है। इससे उसका पुनः प्रयोग किया जा सकता है और व्यापार में नई ऊंचाई तक पहुंचाया जा सकता है।
5. सामाजिक और आर्थिक विकास: ढेंचा वस्त्र उद्योग की अवधारणा न केवल आर्थिक विकास में मदद कर रही है, बल्कि सामाजिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार की अवसरों की वृद्धि हो रही है, जिससे सामाजिक और आर्थिक संरचना में सुधार हो रहा है।
6. विश्वासनीयता और प्रतिष्ठा: ढेंचा के वस्त्र उद्योग का उच्च गुणवत्ता और स्वास्थ्यकर दृष्टिकोण, उसे उपभोक्ताओं के बीच विश्वासनीयता और प्रतिष्ठा का स्रोत बना रहा है। उपभोक्ता अब वहाँ की वस्त्र उद्योगिकता की जगह उच्च गुणवत्ता के उत्पादों की ओर आकर्षित हो रहे हैं।
7. संगठन और सहयोग: ढेंचा के वस्त्र उद्योग ने स्थानीय संगठनों और किसानों के बीच सहयोग को बढ़ावा दिया है। यह उन्हें उच्च मूल्यवान वस्त्र उत्पादन के लिए शिक्षित बना रहा है, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हो रही है। ढेंचा की वस्त्र उद्योग में उच्च गुणवत्ता, स्वास्थ्यकर गुणवत्ता, सामाजिक और आर्थिक सहायता की दिशा में अपना स्थान बना चुका है। यह एक नई सोच का प्रतीक है, जहाँ हम समृद्धि, स्वास्थ्य, और समृद्ध समाज की ओर बढ़ रहे हैं। इससे हमारा परिधान न केवल हमें संवेदनशील बनाता है, बल्कि हमें अपनी प्राकृतिक धरोहर के प्रति भी संवेदनशील बनाता है।

ढेंचा: घरेलू उपयोगों का अद्वितीय स्रोत

ढेंचा वास्तव में अद्वितीय और व्यापक उपयोगों का एक संग्रह है जो घरेलू उपयोग के लिए उपयुक्त है। यह एक प्राकृतिक तत्व है जो घरेलू जीवन में कई उपयोगों के लिए उपयुक्त है। इसे एक संदर्भ में देखते हैं:

1. उर्वरक और खाद्य सुरक्षा: ढेंचा की फसल से बनी खाद्य वस्त्र की फाइबर अत्यधिक पोषण से भरी होती है, जिसे उर्वरक या खाद्य उत्पादों के रूप में उपयोग किया जा सकता है। इससे आम जनता को सस्ती और पौष्टिक खाद्य सामग्री प्राप्त होती है।
2. घरेलू उपकरण: इस की फाइबर का उपयोग घरेलू उपकरणों के निर्माण में होता है। इससे जूते, रजाई, चादर, और टेंट जैसे उपकरण बनते हैं, जो लोगों की रोजमर्रा की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं।
3. आर्ट और क्राफ्ट्स: ढेंचा की तंतु से बनी वस्त्र रूप में आर्ट और क्राफ्ट्स के क्षेत्र में उपयोग होता है। इससे वॉल पेपर, डेकोरेटिव पीसेज, जुएलरी, और अन्य हस्तशिल्प उत्पन्न होती हैं।

4. पर्यावरण के लिए उपयोग: ढैंचा की फाइबर का उपयोग पेड़-पौधों की तरह बनाए गए उपयोग्य आइटम्स में होता है, जैसे कि बास्केट्स, हैंगिंग पॉट्स, और गार्डनिंग उपकरण। इससे प्लास्टिक के प्रयोग को कम किया जा सकता है, जो पर्यावरण के लिए अच्छा है।

5. चिकित्सा उपयोग: ढैंचा की पत्तियाँ और बीज चिकित्सा क्षेत्र में भी उपयोग होती हैं। इससे दवाओं, घरेलू उपचारों, और आयुर्वेदिक दवाओं में उपयोग किया जाता है।

ढैंचा की यह विविधता और उपयोगिता भारतीय उद्योग और खाद्य सुरक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण संकेत है। यह न केवल खाद्य उत्पादन को बढ़ावा देता है, बल्कि औद्योगिक विकास में भी योगदान करता है, जिससे देश की आर्थिक संकीर्णता को कम किया जा सकता है।